Date:	**Q.B.- 10**	**Subject:HINDI**
ClassVII	**Name of the student:**	

पाठ-सरिता का जल

प्रश्न- 1 इस कविता से क्या सीख मिलती है ?

प्रश्न-2 नदी का जल बाधाओं का सामना कैसे करते है ?

खण्ड -ख

प्रश्न- 1 अपठित गदयांश को पढकर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

चोट को समझा वीरता की निशानी

किसी नगर में युधिष्ठिर नाम का कुम्हार रहता था। एक बार वह नशे की हालत में दौड़ते समय लड़खड़ाकर गिर पड़ा। उसके सिर पर घड़े के टूटे हुए टुकड़े से घाव हो गया। उसकी लापरवाही से घाव बढ़ता गया और महीनों बाद मुश्किल से ठीक हुआ।

तभी वहां अकाल पड़ गया। इसलिए कुम्हार अपना नगर छोड़ परदेश चल पड़ा। भटकता-भटकता एक दिन वह जीविका की आशा से राजदरबार में आ पहुंचा। उसके माथे पर चोट का गहरा निशान देखकर राजा ने सोचा- 'यह अवश्य कोई बहादुर व्यक्ति है।

इसके माथे पर इतना बड़ा घाव अवश्य वीरतापूर्वक किसी से युद्ध करते समय ही लगा होगा।' इसलिए राजा ने उसे अपनी सेना में पद दे दिया। इतना ही नहीं, राजा ने उसे अपना विशेष कृपापात्र बना लिया। उसे राजा से इतना मान-सम्मान पाते देख दूसरे राजदरबारी उससे चिढ़ने लगे।

एक बार राजा को युद्ध की तैयारी करनी पड़ी। जब सारे योद्धा लड़ाई के लिए तैयार हो रहे थे तो राजा ने असमंजस में पड़े उस कुम्हार से एकांत में पूछा- 'भद्र तुम्हारा नाम क्या है? और तुम्हारे सिर पर यह घाव किस युद्ध में लगा था?'

कुम्हार ने कहा- 'महाराज, मेरे माथे पर घाव किसी युद्ध में अस्त्र-शस्त्र से नहीं, बल्कि एक बार नशे में मिट्टी के घड़े पर गिर जाने के कारण लग गया था। मैं कुम्हार हूं। मेरा नाम युधिष्ठिर है।' राजा को अपने किए पर बड़ी लज्जा आई। इसके कारण वह अपने कितने ही शूरवीर योद्धाओं की उपेक्षा करता रहा। राजा ने उसे सेना से निकला दिया।

१) कुम्हार का क्या नाम था?

२) उसके सिर पर चोंट का निशान कैसे बना?

३) राजा ने कुम्हार के चोंट को देखकर क्या अंदाजा लगाया?

४) दुसरे राजदरबारी कुम्हार से क्यों चिढ़ने लगे?

५) चोट की सच्चाई पता लगने पर क्या किया

प्रश्न- 2 विशेषण किसे कहते है ? उदाहरण देकर समझाओ ।

प्रश्न- 3 इन वाक्यों मे से विशेषण छाँटकर उनके भेद का नाम लिखो -

क - वह सातवीं क्क्षा में पढ़ती है ।

ख - बड़ी बहन नें मुझे रुपए दिए ।

ग - राम बहुत शक्तिशाली है ।

घ - अच्छे काम करो ।

प्रश्न-4 इन शब्दों को तीन-तीन बार लिखो -

निनाद , हिमगिरी , निर्मल , विहवल , अंतःस्थल

-ममता जैन